मूल्य रु. ५-००

श्री स्वामिनारायण

मासिक

प्रकाशन दिनांक प्रत्येक महिने की ११ तारीख • पूर्ण अंक १९२ • जुलाई -२०२३

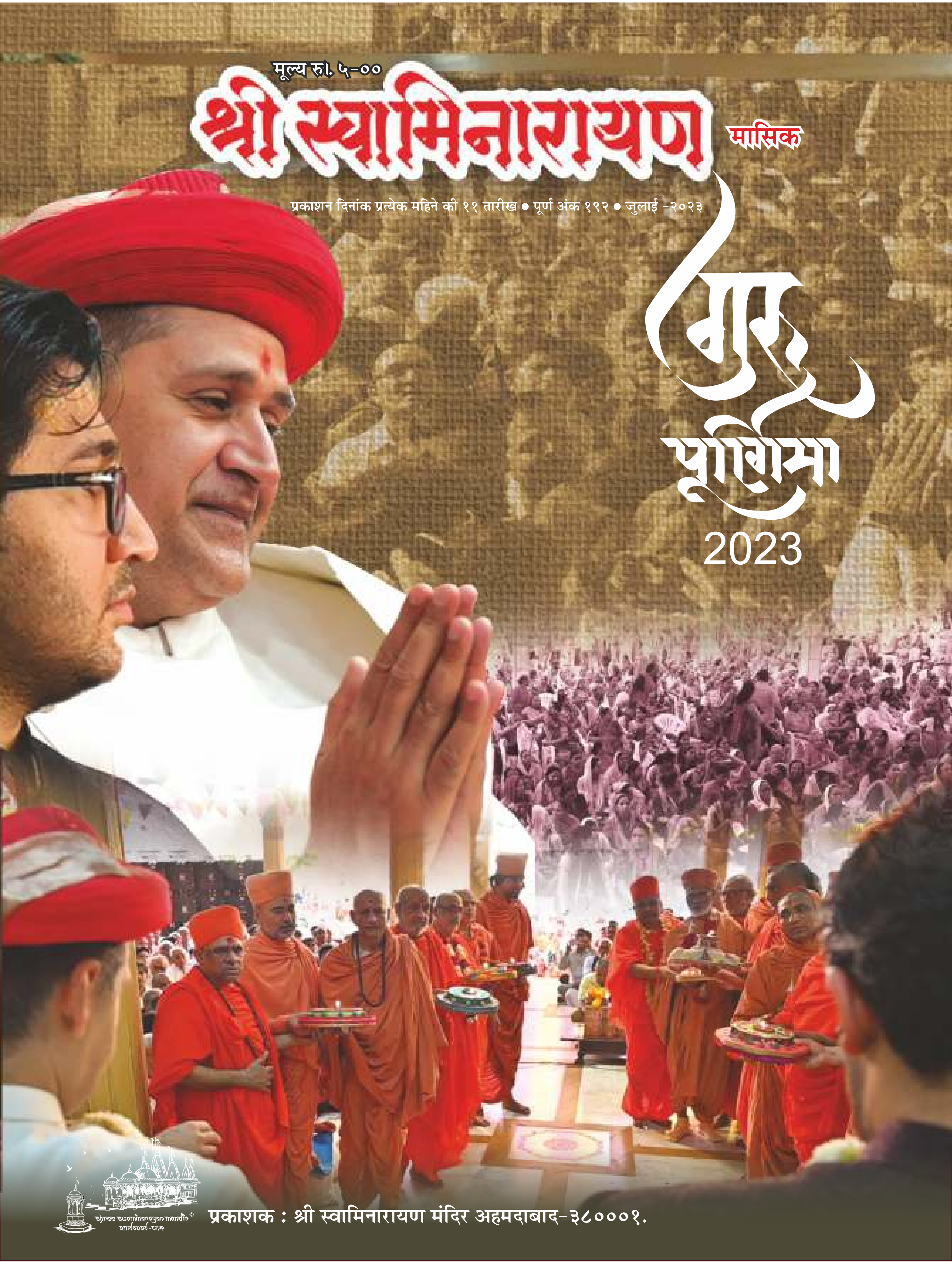

प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१.

सिडनी ब्लेकटाउन मंदिर में आरती उतारते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री ।

राले (अमेरिका) मंदिर के पाटोत्सव अवसर पर ठाकुरजी का अभिषेक करते प.पू. लालजी महाराजश्री ।

सिडनी किंग्स पार्क (आस्ट्रेलिया) मंदिर में सभा को आशीर्वाद देते प.पू. आचार्य महाराजश्री

न्यूयार्क सत्संग सभा में आशीर्वाद देते प.पू. लालजी महाराजश्री ।

कोलोनिया (अमेरिका मंदिर) के सभा में आशीर्वाद देते प.पू. लालजी महाराजश्री ।

विसनगर मंदिर में उत्सव के अवसर पर ठाकुरजी की आरती उतारते हुए प.पू. लालजी महाराजश्री ।

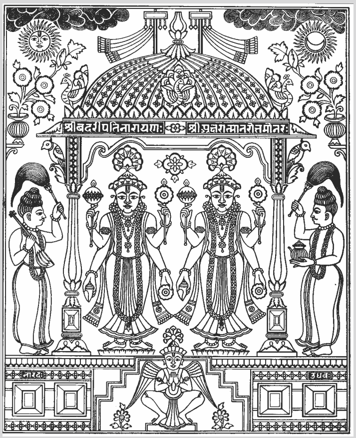

संस्थापक

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ ● फोक्स : २७४१९५९७
www.swaminarayanmuseum.com

श्री नरनारायणेदव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी
आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी
(महंत स्वामी)
मो. ९३१३७१९२३२

पत्र व्यवहार

श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
मो. ९३१३७०६०९५
magazine@swaminarayan.in
www.swaminarayan.info
पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - १६ ● अंक : १९२ ● जुलाई-२०२३

अ नु क्र म णि का

०१. अस्मदीयम् ०४

०२. प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा ०५

०३. अमृत वचन ०६

०४. मोखासण १०

०५. श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से ११

०६. भक्ति सुधा १२

०७. अधिक श्रावण मास में विशेष आयोजन १४

०८. सत्संग समाचार १५

अस्मदीयम्

वर्षाऋतु का आगमन देश के कई भाग में आचुंका है। हमारा देश कृषि प्रधान देश है। यदि अच्छी वर्षा होती है ? तो कृषि फसले अच्छी उत्पादन देती है। अपने देश के किसान, यदि अच्छी वर्षा होती है तो वह अपने घर पर हलवा बनाकर स्वयं खाते है। और किसान बैलो को भी खिलाते है। जो कि आधुनिक काल मे किसान आधुनकि कृषि साधनो से खेती करता है। अब खेती ट्रेक्टर द्वारा की जाती है। अब आर्गेनिक कृषि करने का समय आ गया है। जिससे जीव, प्राणी, मात्र का कल्याण है। इसके अलावा कोई विकल्प ही नही है। अपने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री अपने कई कार्यक्रमो पर इसका वर्णन करते है। सत्संगियो को भी इस बारे में बताते रहते है। पर्यावरण की रक्षा करना विश्व के लिये एक यज्ञ प्रश्न है। अपने पूरे सत्संग को विशेष सलाह है कि एक व्यक्ति एक वृक्ष को लगाये। यह वृक्ष जब तक बडा न हो तब तक उसकी देख भाल करे। वृक्षारोपण को डी.पी. में बताने तक नही रखे। रोपाई के पश्चात पाँच वर्ष तक बच्चे की तरह देख भाल अवश्य करें। यह देश के लिये एक बडी सेवा होगी। इस चातुर्मास में श्रीहरि के जो आठ नियम में से एक नियम का पालन करे।

संपादकश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी पुरुषोतमप्रकाशदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री कार्यक्रम की रुपरेखा
(जून-२०२३)

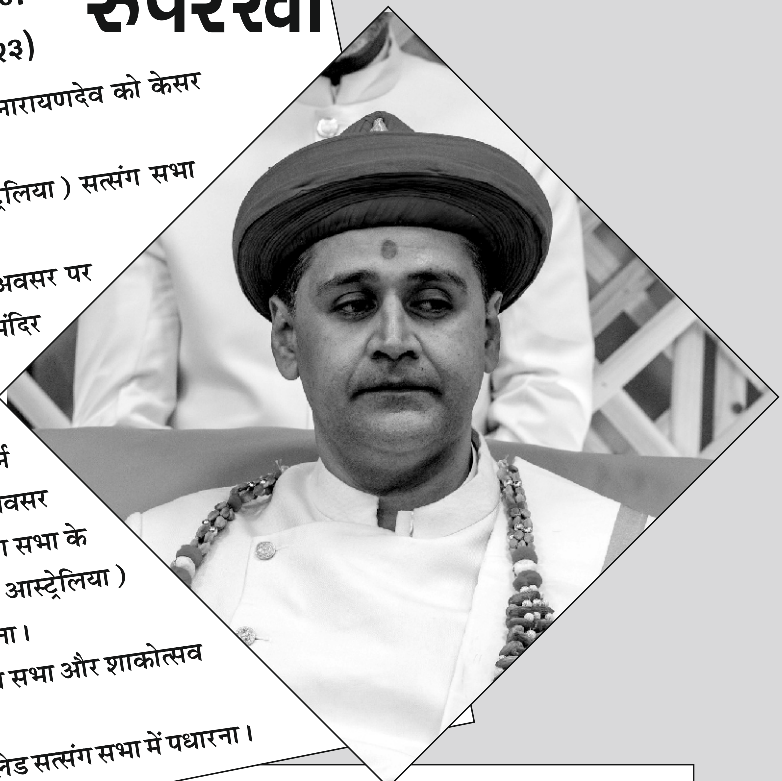

४ अहमदाबाद मंदिर में परकृपालु श्री नरनारायणदेव को केसर स्नान अपने कर कमलो से किये।

८-९ श्री स्वामिनारायण मंदिर पर्थ (आस्ट्रेलिया) सत्संग सभा और शाकोत्सव अवसर पर पधारना।

१०-११ सीडनी किंगसपार्क सत्संग सभा के अवसर पर पधारना तथा श्री स्वामिनारायण मंदिर सिडनी ब्लेक टाउन सत्संग सभा के अवसर पर पधारना।

१३ थी १५ श्री स्वामिनारायण मंदिर मेलबोर्न (आस्ट्रेलिया) सत्संग सभा के अवसर पर डेरीमीट (आस्ट्रेलिया) सत्संग सभा के अवसर पर पधारना। बोरोनीया (आस्ट्रेलिया) सत्संग सभा के अवसर पर पधारना।

१६ थी १७ ग्रीफिथ (आस्ट्रेलिया) सत्संग सभा और शाकोत्सव के अवसर पर पधारना।

१८ श्री स्वामिनारायण मंदिर एडीलेड सत्संग सभा में पधारना।

प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा
(जून-२०२३)

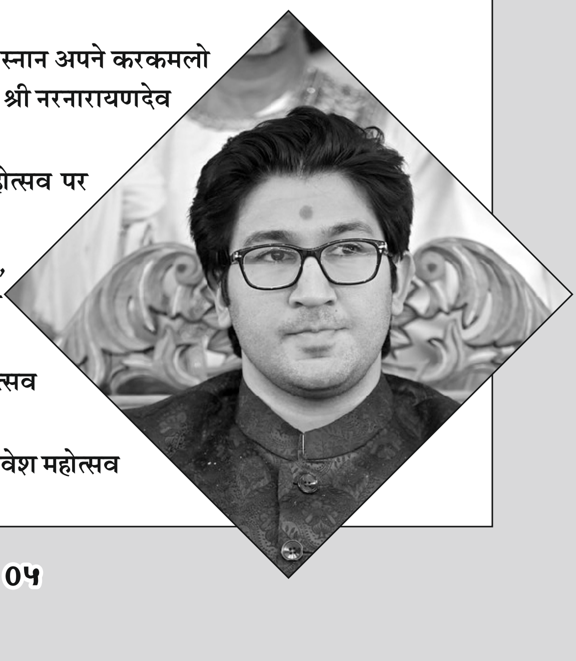

४ अहमदाबाद मंदिर में परमकृपालु श्री नरनारायणदेव को केसर स्नान अपने करकमलो से पूर्ण किये। श्री स्वामिनारायण म्युझियम मे अहमदाबाद शहर श्री नरनारायणदेव युवक मंडलनी शिबिर की स्वयं अध्यक्षता किये थे।

७ न्यु राणीप श्री कष्टभंजनदेव मंदिर, श्री घनश्याम दशाब्दी महोत्सव पर पधारे थे।

११ थी २१ अमेरिका सत्संग प्रवास - श्री स्वामिनारायण मंदिर पारसीपरी, न्युयोर्क सत्संग सभा और शिला पूजन अपने कर कमलो द्वारा पूर्ण किये। श्री स्वामिनारायण मंदिर राले पाटोत्सव के अवसर पर पधारे। श्री स्वामिनारायण मंदिर बायरन (अमेरिका) पाटोत्सव पर पधारना

२४ श्री स्वामिनारायण मंदिर (बहनो का) विसनगर श्रीहरि मंगल प्रवेश महोत्सव के अवसर पर पधारना।

अमृत वचन

संकलन : गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी-बापूनगर)

प.पू. आचार्च महाराजश्री श्री सरली (कच्छ) मूर्ति प्रतिष्ठा के अवसर पर दि. ०६-०५-२०२३ : महंत स्वामीजीने कहा कि इस मूर्ति का दर्शन करे । और हृदय में स्थान देना । यह कार्य अधिक कठिन है । महाराज प्रथम के पहले वचनामृत कहे है, मूर्ति को हृदय में रखे । भगवानके स्वरुप में अखंड लगाव रखना । यह अधिक कठिन में कठिन कार्य है । और इससे बडी कोई उपलब्धि भी नही है । यदि कार्य करने के लिये हम सभी यहाँ एकत्र हुए है । पिछले जो २७२ वचनामृत है । यह पहले का वचनामृत समझने के लिये है । कौन सा भक्त शरीर त्याग कर धाम में जाता है ? कठोर से कठोर मार्ग कौन सा है ? ये सब आधार की बात है । इसे समझने के लिये पीछे का २७२ वचनामृत है । कई लोगो को ज्ञान नही होता है । वे लोग लगातार पढते रहते है लेकिन **It is expose to explain first one, all the remaining Vachnamrut** इस रेफरेन्स से पढे तो सभी लाईट खुल जायेगी । इस वचनामृत में अपने आराध्यदेव के शब्द है कि धर्मकुल के आश्रित ऐसे जो भगवान के भक्त है - वे शरीर छोडकर भगवान के धाम में जाते है । धर्मकुल अर्थात् धर्मदेव का कुल स्वामिनारायण भगवान इसके बाद उनके द्वारा स्थापित धर्मवंशी आचार्य परम्परा, सबसे सरल बात जिसका पाप रोकता होगा । वह नही समझ सकता है । जो पुण्यशाली होगा वह इस चेतावनी से समझ जायेगा ।)

अपने जीवन में कई लोग मिलते है । संसार में किसी व्यक्ति की शादी होती है । बच्चा पैदा होता है । अर्थात् एक व्यक्ति बढ़ जाता है । सम्बन्ध होने के बाद व्यक्ति के व्यवहार में बदलाव आता है । यह आप लोग जानते ही है । लोग कहते है कि फलाने एकदम बदल गये । इस लिये भगवान जैसे भगवान अपने जीवनमें आये है । तो आप में क्या बदलाव आया । बस इतना मेरा प्रश्न है । भगवान के मिल जाने पर ऐसा जीवन व्यतीत हो जाये तो समझे आप का कार्य नही हुआ । कुछ खुशी, उत्साह, उमंग तो आना चाहिए ?

यह सत्संग की महिमा है । संतो तथा आप सभी के प्रयास से परिश्रम और सहयोग से आज भगवान मंदिरमें विराजमान हुए । तो ये भगवान अपने जीवन में, अपने हृदय कमल में रहे । ऐसा प्रयास हमे करना है । महाराज कहे कि मुट्ठी के समान आप का हृदय है । उस हृदय में रहने के लिये हमारा स्थान है । महाराज के रहने के लिये सर्व प्रथम अपना हृदय कमल, दूसरा अपना घर, तीसरा मंदिर है । घर के लिये अभी देवप्रकाश स्वामी ने अच्छी बात कही है । वह अपने भुज मंदिर कीप रम्परा है । मै अभी २०० वर्ष के उत्सव में यह बात बताया था । (हरिभक्तो को सम्भालने के लिये संत संसार के कोने-कोने मे जाते है ।) फिर भी कुछ प्रभाव आता है । दूसरे को क्यो बुलाते है ? सत्य कह रहा हूँ कि आप को कुछ कमी लगती है ? क्या अधुरा रह गया है ? नरनारायणदेव कमजोर है ? यदि है तो कहे । तो हम लोग

क्या फिसल जाते है। दिवाल पर खुश न हो, यह अंतर में बसाये। तभी कार्य पूर्ण होगा।

देवप्रकाश स्वामीने आप को माफ करने के लिये विनम्रता से बोले है ? इसमें माफी माँगना है ही नही। सत्य कहने के लिये क्षमा क्यो माँगना ? जो भुल हो तो क्षमा माँगे ! किसी को खराब लगे तो लगे। हम तो सत्य ही बोलेगे। ऐसे भगवान मिले है, नरनारायणदेव मिले है। ऐसा सत्संग मिला है। राजा के साथ रहकर कंगाल रहे ? क्या हम कमजोर है ?

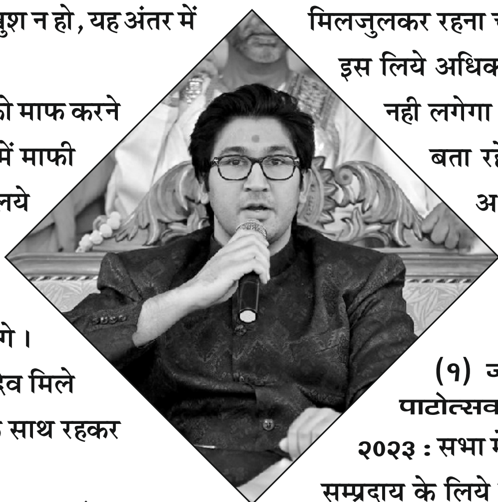

हमने संतो से कहा, कुर्मियो की बाँह थपथपाना अति सरल है। हरि भक्त अति सीधे है। लोग भय में रहते है। पहले का जो भरा है। उसे मिटा नही सकते है। कैलेन्डर टाँगे हो तो उतार नही सकते है। टाटर में पंचर इसी कारण से हुआ है ? कुछ होगा नही। संसार में एक नरनारायणदेव की कृपा बनी रहे। तो दूसरे किसी चीज की आवश्यकात ही नही है। ग्रह नक्षत्र, कुंडली में विश्वास करने वाला एक व्यक्ति बापजी से मिलने आया। महिमा बता रहा था। वास्तव में ग्रह नक्षत्र आदि नरनारायणदेव से बाहर है। नरनारयणदेव के अलावा सभी ग्रह नक्षत्र ही है। बापजी बोले यह व्यक्ति ग्रह-नक्षत्र के चक्क र में मर जाने वाला है। कितनी अँगूठी और चेन पहनेगा। कितना भ्रमित होगा ? इसका कोई किनारा नही है। हमें जो मिला है उस पर निष्ठा बनी रहनी चाहिए ।आपके पिता वृद्ध हो, तबियत खराब हो, दिखाई नही देता है । और स्वर्ग वासी हो जाये। तो पिता के तस्वीर के स्थानपर पडोसी का चित्र लगाते है क्या ? क्या नरनारायणदेव को बदल सकते है ? कोई बुराई करे उसे सहन नही करे। यह सही कह रहा हूँ। यह सरली के लिये नही कर रहा हूँ। आप हरिभक्त है। यह अपना परिवार है। इसमें एक दूसरे के साथ खींच-तान में समय बर्बाद करते है। आपस में गुणबुद्धि के साथ मिलजुलकर रहना चाहिए। यह महाराज का कथन है। इस लिये अधिक ध्यान दे। नही तो बिखरते समय नही लगेगा। हमे आप की चिंता है। इस लिये बता रहे है। नरनारायणदेव के चरण के अलावा कोई दूसरा चरण कल्याणकारी नही है। इसलिये गुमान और गर्व आवश्यकता है।

प.पू. लालजी महाराजश्री

(१) जीवराजपार्क मंदिर का ३५ वे पाटोत्सव के अवसर पर दि. ३०-०५-२०२३ : सभा में वृद्ध लोग बैठे है। ये लोग वर्षो से सम्प्रदाय के लिये कार्य करते आ रहे है। इसी प्रकार युवक लोग युवक मंडल के अधीन रहकर उत्सव या समैया हो छोटे-बड़े प्रसंग हो, छोटी-बडी सेवा हो ये लोग खडे पैर सेवा देते है। इसके पीछे कोई कारणहै तो वह आपकी नरनारायणदेव आप में रहकर बल देते है। नही तो संसार में ऐसे कई लोगो को आप देख रहे है। वर्तमान समय भ्रमका है । लोग सर्वाधिक भ्रमित होते है। हमे वहाँ जाना चाहिए। हमे यही पर रहना चाहिए। भ्रमित होकर भटकते है। असत्य लाभ बन जाता है। यहाँ पर चमत्कार होता है। यहाँ पर वैभव है। इसलिये यहाँ पर जाना चाहिए। आप को तो ऐसा नही हो रहा है। हम यह सब संसार में देख रहे है। लेकिन स्वामिनारायण भगवान कहे है कि कलियुग में कोई हथेली में भगवान को बताये तो मान नही लेना चाहिए। अपना सम्प्रदाय चमत्कार वाला नही है। लेकिन साक्षात् हाजरा-हजूर भगवान है। इसका प्रमाण हम देते है। चमत्कार दिखाने वाले कई लोग मिलेगे। लेकिन मोक्ष का मार्ग दिखाने वाले कोई नही मिलेगे। मोक्ष मात्र नरनारायणदेव के चरणो में ही है। स्वामिनारायण भगवानने जो सिद्धांत बताया है उसी में मोक्ष मिलने वाला है। नही तो पुन चौरासी लाख योगनियो में भटकना पडेगा। यह हमारे उपर आधार रखता है कि हमे देव की शरणागति स्वीकार करके जीवन धन्य बनाये या

चौरासी लाख योनियो में क्रमशः चक्क र लगाना पडेगा। इशलिये हम और संत स्थायी रुप से नरनारायणदेव की महिमा बताते आये है। स्वामिनारायण भगवान अपने करकमलो से नरनारयणदेव की प्रतिष्ठा किये है। और बोले है कि मुझमें और नरनारायणदेव में किसी प्रकार का अन्तर मत करना। यह मेरा ही स्वरुप है।

सर्वोपरि उपासना के नाम पर आज कल कई लोग स्वामिनारायण भगवानने जो देवो की प्रतिष्ठा किये है या पंचदेव हो, पंचदेव हिन्दु धर्म में मान्य है उन देवताओ से द्रोह करते है। हमें हमेशा ध्यान देना है कि स्वामिनारायण भगवान ने जिन देवताओ की स्थापना किये है। ये नरनारयणदेव हो, राधाकृष्णदेव है, लक्ष्मीनारायणदेव है , या गोपीनाथजी महाराज है। ये देव महाराज के अपने स्वरुप है। यह मानकर प्रतिष्ठित किये है। इस लिये इन स्वरुपो में भेदभाव नही रखे। सत्य निष्ठा के साथ नरनारायणदेव के प्रति भाव रखे। नरनारायणदेव के तपस्या के कारण हम देख रहे है। कि सम्प्रदाय का कितना विकास हो रहा है। संत-भक्त और हम सभी परिश्रम अवश्य करते है। लेकिन किसी कर्म का परिणाम हमारे हाथ में नही है। फल देने वाले भगवान बैठे है। नरनारायणदेव खुश है। इस लिये अपना सम्प्रदाय विकास करता है दिखाई दे रहा है। उस देव की तपस्या और कृपा से सम्प्रदाय की प्रगति दिन-प्रतिदिन हो रहा है।

कोरोना काल के बाद हमने युवक मंडल तथा बालमंडल के क्रिया-कलाप पर वेग दिया है। इसकी जागृति के लिये आप सभी संतो एवम् हरिभक्तो की सहयोग चाहिए। युवक मंडल की उम्र सीमा १६ से ४० वर्ष रखी गयी है। कई हरिभक्त युवक मडंल में रहकर उत्तम कार्य किये है। उम्र सीमा के कारण ये लोग मदिर में मार्गदर्शक के रुप में कार्य कर सकते है। विना वृद्ध अच्छा मार्गदर्शन नही मिल सकता है। इस कारण से कार्य असफल हो जाता है। दौड-धूप का कार्य युवक करते है। समय के साथ परिवर्तन आवश्यक है। प्रत्येक युवक फार्म भरकर युवक मंडल में पंजीकृत हो जाये। बालको की भी प्रवृत्तियाँ चालू है। वच्चे अपने भविष्य है। इस लिये बच्चे सत्च ज्ञान पाये। ये हमारी जिम्मेदारी है।

(२) न्यू राणीप मंदिर के १० वे पाटोत्सव के अवसर पर : आप सभी का जो श्री नरनारायणदेव के प्रति जो भाव है। यह प्रगति का कारक है। अपने इस क्षेत्र में बालमंडल, युवक मंडल तथा सत्संग की जो प्रगति है, वह मात्र नरनारायणदेव के प्रति निष्ठा रखने का भाव है। इस सम्प्रदाय में महाराजने सब सरल बना दिये है। अपने सनातन धर्म में मान्य वेद है। शास्त्र है, उपनिषद है, इन सभी का सार महाराजने २१२ श्लोक की शिक्षापत्री में लिख दिया है। समय का आकलन करे तो स्वामिनारायण सम्प्रदाय सबसे नवीन सम्प्रदाय है। महाराज शरीर धारण करके ४९ वर्ष तक पृथ्वी पर रहे। जो विचारधारा लोगो के हृदय में दिये। यह समय से आगे है। महाराज खराब प्रथा को बंद करवाये थे। धर्म के नाम पर अधर्मी आचरण को बंद करवाये थे। सर्व साधारण बात कहे ''सभी जीवो के हित हेतु'' कोई मनुष्य छोटा नहीं है। किसी मानव के प्रति भेदभाव नही रखे। प्रत्येक व्यक्ति का कैसे हित हो तथा धार्मिक मार्ग पर सभी लोग चले। ऐसा प्रयास स्वामिनारायण भगवानने किया था। हम सभी के लिये एक मार्ग बताये है। हमे उसी रास्ते पर चलना है। ईधर-उधर भटकना नही है। आज कल प्रायः लोग अंधश्रध्धा के कारण ईघर-उधर भटक जा रहे है। स्वामिनारायण सम्प्रदाय में साक्षात् महाराज स्थित है। यह प्रत्यक्षता का सम्प्रदाय है। जो देवो का होकर, देव की आज्ञा मे रहकर सुखी है।

सबकी रक्षा करना और संकल्प को पूरा करने के लिये पिछले चार वर्ष से महाप्रतापी हनुमानजी बिराजे है। जो हमारे कुल देवता है। इस समय यह नही भूलना चाहिए कि सम्प्रदाय में हमे जैसे को कभी कभार हनुमानजीदादा

भी हमारे बीच है । दादा के प्रताप से यदि दया की कृपा हो जाये तो किसी की कृपा हो तो किसी की ताकात नही की बाल टेढा नही कर सकता है । यह हनुमानजीदादा का बल है । इतिहास गवाह है । जब-जब आवश्यकता पडी है पृथ्वी पर आये है । राम स्वरुप आवश्यकता आई तो या धर्मदेव को कष्ट आया तो तब दादा साक्षात् आये है । दादा की महिमा का वर्णन शब्दो में नही किया जा सकता है । इस अवसर पर मंदिर की जगह कम पड रही है । संतो की चर्चा के बाद इसके जीर्णोध्धार की प्रोजेक्ट चालू कर रहे है । विशेष जानकारी आप को पी.पी. स्वामी (महंत) बतायेगे । अपना समझ कर सहयोग करे ।

(३) पारसीपनी मंदिर (ISSO) : अपने पारसीपनी के मंदिर को छपैया धाम का नाम दिया जा रहा है । और छपैयाधाम स्वामिनारायण भगवान का जन्म स्थल कहा जाता है । यह मेरा भी घर कहा जाता है । इस लिये आप सभी हाँ के हरिभक्त हमारे घर के सदस्य है . आप सभी अपने ळगाव से सत्संग का विकास किये है । इसमें भी जितने भी **ISSO** के मंदिर है । उन मंदिर की कमेटी में सभी युवक ही है । इस कारण से मंदिर का विकास अधिक दिखाई देता है । अभी युवको ने **ISSO** का **Youngster** दिखाये है । इस में सेवा प्रमुख स्थान पर है । क्योकि स्वामिनारायण इस पृथ्वी पर आकर सर्व प्रथम मंदिर नही बनाये थे । महाराज बोले है कि हमे प्रति व्यक्ति मंदिर बनाना है । महाराजने नव मंदिरो को बनवाया था । यह पहले मानव बनना सिखाये थे । मानवता यह नींव है । आप कितना भी माला करे प्रत्येक नियम का पालन करे । एकादशी, रामनवमी का व्रत करे । यदि अंदर मानवता नही है तो सब कुछ बेकार है । मानवता हर धर्म की नीवं है । और मानवता के अलावा कोई धर्म नही है । इस लिये महाराजने सर्व प्रथम अन्नक्षेत्र बनाये । ब्राह्मणो को भोजन करवाये । गाँव-गाँव मे जाकर कुप्रथा बंद करवाये । धर्म के नाम पर होने वाली हिंसा पर रोक लगाये । पशु हिंसा बंद करवाये । सबसे पहले मानव बनना सिखाये । इस लिये श्री नरनारायणदेव युवक मंडल टैग लाईन दिये है । **Be human first, then religions** (सर्व प्रथम मनुष्य बने, बाद में धार्मिक) यह सब हमे सीखने की आवश्यकता है । महाराजजीने सोच समझकर टैग लाईन दिये है । क्योकि हरिभक्त बनने की शुरुआत और समझदारी युवक मंडल से आती है । मानवता सर्व प्रथम है । इसके पश्चात सब कुछ है । २१२ श्लोक की शिक्षापत्री में महाराजने स्पष्ट आज्ञा दिये है । जो आश्रित इसका पालन करेगा । वह सुखी ही नही महासुखी हो जायेगा । हमें भगवान को खुश करने का कार्य करना चाहिए । अधिक से अधिक मानव किस प्रकार मंदिर से जुडे ऐसे क्रिया कलाप कर रहे है । ये धन्यवात के पात्र है ।

पोस्ट द्वारा अंक नही प्राप्त होने के बारे में

वर्तमान समय में पोस्ट द्वारा अपना श्री स्वामिनारायण मासिक नियमित नही प्राप्त होता है । या कभी - कभार नही मिलता है । ऐशी शिकायत कार्यालय को मिल रही है । हम लोग अत्यंत ध्यान से पिनकोड के अनुसार सार्टिग करके हर माह के ११ वी तारीख को पोस्ट कर देते है । फिर भी ऐसा बन रहा है । दो से तीन बार डाक विभाग में शिकायत की गयी है । यह लिखित शिकायत है । हम जैसे कई सामयिक वाले भी शिकायत किये है । जिस सदस्य को यदि अंक नही मिले तो वह सदस्य अपने स्थानीय डाक घर पर लिखित शिकायत अवश्य दे । तथा वहाँ से रसीद अवश्य प्राप्त करे । यदि किसी व्यक्ति की शिकायत कार्याल में आती है । तो उसे दूसरी प्रत्रि तुरंत कार्यालय से भेजी जाती है ।

श्री स्वामिनारायण भगवान के चरण पावन प्रसादी के गाँव

मोखासण

– शास्त्री स्वामी नारायणवल्लभदासजी (वडनगर)

- अहमदाबाद कालुपुर मंदिर से सडक द्वारा १ घंटे ४० मिनट
- अहमदाबाद विमान अड्डे से १ घंटे

उत्तर गुजरात के दंडाव्य में स्थित मोखासण गाँव कलोल तालुका के गांधीनगर जिले में आता है। यहाँ पर पहुचने के लिये अहमदाबाद से रेलवे मार्ग से कलोल जाते है। कलोल से एस.टी. (सडक मार्ग) से मोखासण जाते है। अहमदाबाद से एस.टी. द्वारा मोखासण जा सकते है।

श्री नरनारायणदेव गद्दी के अन्तर्गत गाँव में प्रवेश करते ही सुंदर हरि मंदिर है। हरि मंदिर में श्रीहरि की अलौकिक पटमूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा प.पू.ध.धु. आचार्यश्री १००८ श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के करकमलो द्वारा किया गया है। मंदिर के चौक के खास बाहर रास्ते के उपर श्रीजी महाराज की स्मृति छत्री गाँव के प.भ. पटेल अ.नि. ईश्वरदास बोधीदास के सुपुत्रो द्वारा प.भ. पटेल रमणभाई ईश्वरदास तथा प.भ. पटेल गोविंदभाई ईश्वरदास तथा प.भ. पटेल भगवतभाई ईश्वरदास परिवार की तरफ से सुंदर सुशोभित संगमरमर के पत्थर से बना श्रीहरि के चरणारविंद को स्थापित किये है।

भगवान श्री स्वामिनारायण विचरण करते-करते वह गाँव से मोखासण ओ। तब गाँव के मुमुक्षु हरिभक्त श्री मनोहरभाई ब्राह्मण, कुबेरभाई पटेल, जेठाभाई पटेल रायचंदभाई तथा क्षत्रिय आसककरणभाई इत्यादिने श्रीजी महाप्रभु का स्वागत समैया किये थे। श्रीजी महाराज को गाँव तथा घर-घर ले जाकर अर्चना, पूजा तथा आरती करके लाभ उठाये थे। श्रीजी महाराज को भोजन कराके जय-जयकार किये थे।

आज भी मोखासण में श्री नरनारायणदेव आश्रित हरिभक्तो की सत्संग और गाँव की सेवा सम्प्रदाय मे जानी जाती है। आज भी मोखासण गाँव के कई हरिभक्त श्रीजी महाराज की कृपा से अमेरिका जैसे देश में रहकर सत्संग के साथ सम्प्रदाय के अनेक मंदिर तथा समैया में तन, मन, धन से सहयोग करते है। ये लोग श्रीहरि तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा संतो की कृपा प्राप्त करके धन्यता अनुभव करते है।

भगवान श्री स्वामिनारायण मोखासण आये। उसका उल्लेख 'भक्तचिंतामणी' नामक ग्रंथ में प्रकरण-११९ अनुसार है। जो निम्न लिखित है।

भक्त मनोहर छे ब्राह्मण,
कणबी कुबेर जेठो हरिशरण !
रायचंद क्षत्रि आसकरण,
एहादि भक्त रहे मोखासण।

श्री स्वामिनारायण म्युज़ियम

श्री स्वामिनारायण म्युजियम के द्वार से

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में पंजीकृत श्री महाविष्णुयाग की सूची-जून-२०२३

दि. ०५-०६-२०२३ प.भ.श्री अ.नि. सरोजबेन मुकुंदभाई पटेल – गांधीनगर – ह. भाविन मुकुंदभाई पटेल
दि. १६-०६-२०२३ प.भ.श्री अरविंद केसरा हालाई – बलदिया-कच्छ
दि. १७-०६-२०२३ प.भ.श्री संजय रसिकभाई पटेल – यु.एस.ए. (मोखासणवाले)
दि. २०-०६-२०२३ प.भ.श्री हर्षदभाई हरिभाई पटेल – नांदोल
दि. २४-०६-२०२३ प.भ.श्री जैनम मुकेशभाई भाईलालभाई पटेल – वहेलालवाले – थलतेज
दि. २६-०६-२०२३ प.भ.श्री ब्रिजेशभाई शांतिभाई पटेल – यु.एस.ए.
दि. २९-०६-२०२३ प.भ.श्री जीग्नेश कनुलाल पटेल – ह्युस्टन-यु.एस.ए.

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में भेट देनेवालों की सूची-जून-२०२३

रू।. १,००,०००/- प.भ.श्री डॉ. कीर्तन आर. दोशी – अहमदाबाद

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आज्ञा से एवम्
प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा प.पू. लालजी महाराजश्री एवम्
पूरे धर्मकुल की कृपा से श्री स्वामिनारायण भगवान की जन्मभूमि

छपैया मं चल रहे भव्य नूतन निर्माण कार्य के उपलक्ष्य में
श्री स्वामिनाराण म्यूजियम द्वार आयोजित

श्री घनश्याम बाल चरित्र सप्ताह पारायण

पवित्र अधिक श्रावण मास में
दि. २४-०७-२०२३ से ३०-०७-२०२३ तक

शुभ प्रसंग पर भेंट देने के योग्य अथवा व्यक्तिगत संग्रह के लिये – श्री नरनारायणदेव
की प्रतिमा वाला ५/१०/२० ग्राम चांदी का सिक्का म्युजियम में प्राप्त होता है ।

सूचना :श्री स्वामिनारायण म्युजियम में प्रति पूनम को प.पू. मोटा महाराजश्री प्रातः ११-३० को आरती उतारते हैं ।

સંપ્રદાયમાં એક માત્ર વ્યવસ્થા શ્રી સ્વામિનારાયણ મ્યુઝિયમમાં મહાપૂજા / મહાભિષેક નોંધાવવા સંપર્ક કરો.
મ્યુઝિયમ મોબાઈલઃ- ૯૮૭૯૫૪૯૫૯૭, પ.ભ. પરષોત્તમભાઈ - દાસભાઈ (બાપુનગર) : ૯૯૨૫૦૪૨૬૮૬
www.swaminarayanmuseum.org/com • email: swaminarayanmuseum@gmail.com

भक्तिसुधा

(प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री के आशीर्वचन में से) एकादशी सत्संग सभा में (कालुपुर मंदिर हवेली) "अपने अंदर का दोष नहि देखा, तो क्या उपाय करेगे"

(संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल – घोडासर)

हम लोगो की दौड धाम लगातार बनी रहती है। हम लोग अभी यहाँ पर बैठे है फिर भी दौड रहे है। क्योकि हमारे चित्त की वृत्तियाँ चारो दिशा में दौडती है। इस संसार में रहने के लिये सब करना पडता है। अच्छी बात है। इसमें क्या कष्ट है। तो इसमें यह कष्ट है कि अपनी दिशा विपरीत होती है। हम उल्टी दिशा में गतिमान रहते है। यह उल्टी दिशा क्या है ? हम अपने जीवन निर्वाह के लिये भौतिक साधन के लिये दौडते है। यह एक अच्छी बात है। लेकिन साधन एकत्र करने की वृत्ति यह गलत है। यह वस्तु क्षणिक सुख देती है। यह क्षणिक सुख सच्चा सुख नही होता है। हम इसे सच्चा आनंद मान लेते है। यह विपरीत दिशा है। सच्चा आनंद उसे कहते है कि एक बार मिल जाने पर सतुष्टि आ जाये। दूसरी बार इच्छा नही हो। एक बार वस्तु प्राप्त हो जाने के बाद दोबारा पुन: ईच्छा प्राप्त करने की हो जाती है। तो यह कैसे होता है ? इस दौड का अंत क्यो नही आता है ? तृप्त क्यो नही होते है। हमारी दौड की तरफ आनंद नही होता है। इस कारण से हम सभी भगवान से दूर होते जा रहे है। इसे हम एक उदाहरण से समझते है। आप को किसी जगह पर जाना है। वह जगह आप के यहाँ से १० की.मी. दूर है। लेकिनआप विपरीत दिशा में चलेगे है। और १०० की.मी. की दूरी तय कर लिये हो तब आप को पता चले। कि हम जहाँ पर थे। वहाँ से मात्र स्थल १० की.मी. ही था। इस कारण से आप को ११० की.मी. चलना पडा। इसका अर्थ यह हुआ कि हम जितना विपरीत दिशा में जाते है। उतना ही माया का आधिपत्य हम पर भारी होता जाता है। हम भगवान से दूर होते जाते है। हम जितना भगवान के पास रहेगे। उतना ही कम माया का प्रभाव हम पर रहेगा। आप सभी लोग छपैया गये होगे। तब आप के संकल्प-विकल्प बंद हो जाता है। एक अलौकिक शांति का अनुभव मिलता है। यदि हम अपने भगवान के प्रागट्य भूमि पर जाते है। ते हमे इतनी शांति मिलती है। इस लिये यदि हम विचार करे कि भगवान के शरण में जायेगे तो कितनी अधिक शांति मिलेगी। माया की शक्ति भगवान के शरण के सिवाय प्रत्येक स्थान पर है। सभी देव-देवियो, जीव जंतु सभी जगह माया का प्रभाव है। क्योकि सृष्टि की उत्पत्ति माया से ही हुई है। माया के बिना सृष्टि का सर्जन ही नही हो सकता है। माया सर्वत्र प्रसरी है। हम उदाहरण से समझते है। जैसे रात होती है। तो रात में चन्द्र का प्रकाश होता है। तारा का प्रकाश होता है। हमे अपने घर में प्रकाश करना हो तो बिजली और दीपक होता है। कुछ समय के लिये वहाँ कुछ क्षेत्र में अंधकार दूर कर सकते है। लेकिन रात तो समाप्त नही होती है। कितना भी तारे का प्रकाश हो दिये का प्रकाश हो अंधेरा तो अवश्य होगा। चँन्द्रमा के रहने पर भी रात तो रहेगी। रात कब जायेगी ? जब सूर्योदय होता है तो रात्रि का होना समाप्त हो जाता है। अंधकार दूर हो जाता है। रात्रि में कार्य करने के लिये हमें जैसे प्रकाश चाहिए। तो हम दिये (बल्ब) का उपयोग करते है। उसी प्रकार हम जब, धुन, कीर्तन, भजन एवम् सत्संग ये सब करते है तो माया रुपी अंधकार दूर करने के ये साधन है। जब तक हम यह करते रहेगे। तब तक माया का प्रभाव नही पडेगा। हमारे जीवन में से माया कैसे दूर हो ? हम माया पर विजय कैसे प्राप्त कर सकते है। हमारी आत्मा में परमात्मा रुपी सूर्योदय प्रगट होता है तब। जब तक हमारे अंदर परमात्मा रुपी प्रकाश नही आये। तब तक माया से बचने के लिये इनम सभी साधनो का उपयोग करना चाहिए। अंदर

का प्रकाश मिल जाने से मन के विकार दूर हो जाते है। अंदर के विकारो का हटाना हो तो अन्दर परमात्मा रुपी प्रकाश फैले तो हमे दिखाई देगा। अर्थात् ''अपने दोष हमे खुद दिखाई देने लगे तो काम हो गया'' । इसके लिये अर्न्तदृष्टि करना पडता है। अंतर में दौडना पडता है । महाराज ने गढडा प्रथम प्रकरण में २० वी वचनामृत में अर्न्तदृष्टि पर प्रकाश किये है।''अज्ञानी में सबसे बड़ा अज्ञानी कौन है ?'' जिसने सत्संग किया हो, उसे जीवात्मा का दर्शन उसके हाथ में ही है। जो भगवान के प्रताप को सोचकर अर्न्तदृष्टि करता है। तो वह अपने चक्षु को अति उज्जवल प्रकाशित देखता है। वह प्रकाश के मध्य प्रत्यक्ष पुरुषोत्तम भगवान उसकी मूर्ति में देखता है। वह नारद जैसे सुखी हो जाता है। हरिभक्त की जो कमी होती है। वह अपने आलसी पन के कारण करता है।

आलस्य का त्याग करके जागृत होने की बात है। हम जब सत्संग में बैठे रडते है तो यहाँ माया नही आती है। बाहर निकलने पर माया हम पर सवार हो जाती है। इस लिये अर्न्तदृष्टि सदैव रखना चाहिए। सदैव जागृत रहना चाहिए। स्वयं के कल्याण हेतु सचेत रहना पडेगा। सत्संग कितने समय का होता है। दो घंटे या चार घंटे इसके बाद शेष समय में क्या ? हम जितना सचेत रहेगे। उतने ही शीघ्रता से हमारा कल्याण होगा। हमें निश्चित करना है कि हमे इस माया लोक में रहना है कि महाराज के शरण में जाना है। प्रकृति को देखने से प्रकृति खत्म हो जाती है। आत्म स्वरुप हो कर दोष देखना आ जाता है। उसे हम 'अर्न्तदृष्टि' कहते है। जब हमे अपना दोष दिखाई देने लगे तो समझ ले अब परमात्मा रुपी सूर्योदय हो रहा है। ऐसा सत्संग मिला है। ऐसे भगवान मिले है। हम तूफान करेगे तो स्वयं परेशान होगे। जैसे वर्ग में शिक्षक उपस्थित हो तो सभी विद्यार्थी शांत होकर बैठ जाते है। अंदर के 'विकार' (शब्द, स्पर्श, रुप, स्वाद, गंध) और 'कषाय' क्रोध मान, माया लोभ शांत हो जाता है। क्यो ? भगवान की उपस्थिति में माया मर्यादा में व्यवहार करती है। भगवान की उपस्थिति नही होने पर बेफिक्र व्यवहार करती है। हम सचेत होगे तो माया भगवानके मार्ग पर चलने में सहायक होगी। और अपना 'आत्म बल' बढता है। यदि हम माया का मार्ग पर चलते हे तो सब कुछ अच्छा लगता है। इसमें क्या कष्ट है। मुझे कुछ खराब नही लगता है। मुझे कुछ तकलीफ भी नही है। कुछ वर्षो के पश्चात सब कुछ बिगडने लगता है। माया के कुप्रभाव को तो भोगना ही पडता है। सब कुछ दिखाई देने लगता है। हम अहंकार में न करने वाले कृत्य भी करते है। जीवन में दुःख आने पर व्यक्ति को पता चलता है। जीवनमें यदि दुःख आता है तो उसमें हमारी भूल ही मुख्य कारणहै। जैसे बच्चे बच्चियाँ मातापिता को हैरान करते है। ऐसा-वैसा व्यवहार करते है। माता एवम् पिता एक सीमा तक बर्दास्त करते है। वे मातापिता को कुछ समझते ही नही है। माता-पिता सुधरने का अवसर देते है। और तत्काल दण्ड नही देते है। सुधरने के लिये अवसर देते है। अतिशय होने पर दण्ड देते है। भगवान भी इसी तरह का व्यवहार करते है। सत्य आनंद मिल जाने के बाद जीवन में किसी आनंद की आवश्यकता नही रहती है। तृप्ती प्राप्त हो जाती है। यह तृप्ति भगवान के चरण में मिलती है।

प.पू. भविष्य के आचार्य १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रासदजी महाराजश्री के आज्ञा से विश्व का सर्वप्रथम श्री स्वामिनारायणमंदिर कालुपुर मंदिर संचालित

श्री नरनारायणदेव बाल मंडल तथा श्री नरनारायणदेव युवक मंडल (उम्र सीमा १६ से ४०) जुडने के लिये सम्पर्क करे। विपुल ठक्कर मो.: ९३२८१९४१४३

(कालुपुर कोट क्षेत्र तथा अहमदाबाद के पूरे क्षेत्र में जहाँ पर बाल मंडल तथा युवक मंडल नही हो तो सदस्यता के लिये सम्पर्क कर सकते है।)

अधिक श्रावण मास में विशेष आयोजन

अधिक श्रावण मास में श्री नरनारायणदेव के दर्शन हेतु पदयात्रा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से तथा भविष्य के आचार्य प.पू. १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आशीर्वाद से एवम् प्रेरणा से तथा कालुपुर मंदिर के महंत स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी के सुंदर मार्गदर्शन मे अधिक श्रावण मासमें श्रावण सुद-१२ ता. ३०-०७-२०२३ रविवार अहमदाबाद शहर और नजदीकी क्षेत्र के प्रत्येक मंदिर के भाई-बहन अपने क्षेत्र के मंदिर से श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर श्री नरनारायणदेव के दर्शन हेतु पैदल यात्रा में जुडने के लिये विशेष प.पू. लालजी महाराजश्रीने आज्ञा दिया है। प.पू. गादीवालाश्री के आज्ञा से अधिक मास में श्रृंगार आरती में प्रातः ८-०५ बजे सभी बहने मंदिर में दर्शन हेतु आये। श्रावण सुद-१२ ता. ३०-०७-२०२३ रविवार को पैदल यात्रा में जुडने के लिये अपने मंदिर के कोठारी या युवक मंडल से सम्पर्क करे।(आयोजक श्री नरनारायणदेव युवक मंडल)

अखंड श्री स्वामिनारायण महामंत्र धुन

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव के परम सानिध्य में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के शुभ सानिध्य में और पू. महंत स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा-मार्गदर्शन से अधिक पवित्र श्रावण मास में श्रावण वद-११ एकादशी दि. १२-८-२०२३ शनिवार के दिन श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में श्री स्वामिनारायण महामंत्र की अखंड धुन का भव्य प्रबन्ध किया गया है। पवित्र अधिक श्रावण और चातुर्मास अर्थात् श्रीहरिने जो हम लोगो से जिस भजन की आज्ञा किये है। तो इस अखंड महामंत्र का लाभ लेने के शहरीजन तथा ग्राम्य के लोग भाग ले। इसके लिये प.पू. लालजी महाराजश्री की विशेष सूचना है। दि. १२-०८-२०२३ अ. श्रावण वद एकादशी समय प्रातः ६ बजे से शायं ६ तक प्रसादी के सभा मंडप कालुपुर मंदिर

अहमदाबाद मंदिर में अधिक मास की समूह महापूजा

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव के सानिध्य में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा-आशीर्वाद से तथा प.पू. लालजी महाराजश्री की अध्यक्षता में तथा पू. महंत स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी के मार्गदर्शन के अनुसार अधिक श्रावण वद-१२ दि. १३-०८-२०२३ रविवार के दिन श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में समूह महापूजा का भव्य प्रबन्ध किया गया है। इसमें गाँव-गाँव से तथा शहर के हरिभक्त आकर धर्मकुल के अलौकिक सानिध्य में रहकर युगल रुप में बैठकर अलौकिक लाभ ले। समय प्रातः ८-०५ मिनट (विशेष सम्पर्क कोठार कार्यालय मो. ८२३८००१६६६

अधिक मास में ३० गाँवो में संतो द्वारा सत्संग सभा

पवित्र अधिक श्रावण मास में हरिभक्तो को सत्संग से विशेष बल मिलता है। श्री नरनारायणदेव के प्रति निष्ठा दृढ बने। इसी शुभ उद्देश्य से अपने भविष्य के आचार्य प.पू. १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री ने आज्ञा किया है कि ३० जितने गाँव सार्वजनिक तौर पर सत्संग सभा का आयोजन करे। तथा आस-पास के गांव भी इसका लाभ उठाये। सभा में लाभ ले इसके लिये विशेष अनुरोध है। आप के गाँव के कोठारीश्री अथवा युवक मंडल के सदस्य से सत्संग सभा की सम्पूर्ण जानकारी फोन से प्राप्त करे।(महंत शा. स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी-कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर)

अहमदाबाद मंदिर में प्रत्येक पूर्णिमा को सभा

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव के शुभ सानिध्य में और प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् परमपूज्य बड़े महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद से कालुपुर मंदिर के महंत स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी के सुंदर प्रेरणा और मार्गदर्शन से आगामी ज्येष्ठ सुद-१५ से अहमदाबाद के मंदिर के प्रसादी सभा मंडप में प्रातः ८-१० से १०-०५ तक विद्वान संतो के मुख से कथा-वार्ता का सुंदर शुरुआत किये थे। हरिभक्तो के यजमान पद से सम्पूर्ण कार्यक्रम हुआ है। प्रत्येक पूर्णिमा को अलग-अलग संतो ने कथा का लाभ दिये। पूर्णिमा को दर्शन आने वाले हरिभक्तो से अनुरोध है कि कथा का लाभ ले। जिसे पूर्णिमा का यजमान बनने की ईच्छा हो वह कोठार कार्यालय में महंत स्वामी का सम्पर्क करे।

सत्संग समाचार

अहमदाबाद मंदिर में श्री नरनारायणदेव का केसर स्नान

भरतखंड के राजाधिराज परमकृपालु श्री नरनारायणदेव आदि देवो को वैशाख सुद-३ (त्रीज) से ज्येष्ठ सुद-१४ तक चंदन का वस्त्र पहनाकर दिव्य दर्शन भक्तो को कराया गया । ज्येष्ठ सुद-१५ (पूर्णिमा) ज्येष्ठा नक्षत्र में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्री के कर कमलो द्वारा प्रातः ६-३० से लेकर ७-०० बजे तक श्री नरनारायणदेव को केसर स्नान वैदिक रुप से पूर्ण किया गया था । शहर तथा ग्रामीण अंचल के हजारो हरिभक्त दर्शन करके धन्य हुए ।(कोठारी शा. स्वा. नारायणमुनिदासजी)

श्री स्वामिनारायण कष्टभंजनदेव मंदिर न्यू राणीप श्री घनश्याम दशाब्दी महोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की पूर्ण कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् प.पू. बड़े महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद तथा कालुपुर मंदिर के महंत स्वामी पूज्य स.गु. शास्त्री स्वामी श्री पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से और स.गु.शा. स्वामी व्रजभूषणदासजी (गांधीनगर) के मार्गदर्शन में न्यु राणीप श्री स्वामिनारायण कष्टभंजनदेव मंदिर श्री घनश्याम दशाब्दी महोत्सव दि. ७-६-२०२३ से १२-६-२०२३ तक दिव्य रुप से मनाया गया ।

इस अवसर के उपलक्ष्य में श्रीमद् सत्संगिजीवन पंचान्ह रात्रिय पारायण स.गु. शा. स्वामी दिव्यप्रकाशदासजी (नारायणघाट महंतश्री) के वक्तापद से हुई थी । इस प्रसंग के उपलक्ष्य में होमात्मक महापूजा का प्रबन्ध किया गया था । जिस में प.पू. लालजी महाराजश्री पधारे थे । महापूजा की प्रथम आरती करके सभी हरिभक्तो को आशीर्वाद दिये थे। बहनो के आमंत्रण का सम्मान करती हुई । बहनो की गुरु लक्ष्मीस्वरुपा अ.सौ. गादीवालाश्री आकर बहनो को दर्शन एवम् आशीर्वाद का सुख दी थी । धाम से कई संत आये थे। पूरा प्रसंग यहाँ मंदिर के कोठारीश्री ट्रस्टी मंडल श्री नरनारायणदेव युवक मंडल और न्यु राणीप के समस्त सत्संग समाज के प्रयास से पूर्ण हुआ। कई हरिभक्त विविध सेवा प्रदान किये थे । (कोठारीश्री न्यू राणीप मंदिर)

विसनगर गाँव में श्रीहरि मंदिर मंगल प्रवेश महोत्सव

आराध्यदेव भगवान श्री स्वामिनारायण तथा भरतखंड के राजाधिराज परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की असीम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. १००८ आचार्य श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री, .पू. बड़े महाराजी, प.पू. १०८ श्री भावि आचार्य श्री व्रजेन्द्रप्रसादज़ी महाराजश्री, प.पू. गादीवालाश्री एवम् पूरे धर्मकुल के आज्ञा आशीर्वाद से जेतलपुर मंदिर के महंत स.गु. शा. स्वामी आत्मप्रकाशदासजी के मार्गदर्शन एवम् वडनगर मंदिर के महंत स.गु. शास्त्री नारायणवल्लभदासजी स्वामी, मेहसाना मंदिर के महंत स.गु. स्वामी नारायणप्रसाददासजी के आयोजन से विसनगर गाँव में दि. २३-६-२३ से २७-६-२३ तक भव्य मंगल प्रवेश महोत्सव मनाया गया ।

इस अवसर पर श्रीमद् सत्संगिजीवन कथा पारायण किया गया था । इसके वक्तापद पर सम्प्रदाय के प्रसिद्ध कथाकार स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशशासजी (बड़े पी.पी. स्वामी) कथा वार्ता का लाभ दिये थे । पू. सांख्ययोगी जयाबा, दयाबा, विमलाबा आदि बहनो के अथक परिश्रम से विसनगर में नया भव्य नवीन मंदिर बहनो का तैयार किया गया । जिसमें दि. २७-६-२३ के दिन प.पू. भविष्य के आचार्यश्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री पधारकर ठाकुरजी के स्वरुपो की पूजा किये । आरती किये । विशाल सभा को दर्शन तथा आशीर्वाद दिये । धाम से संत तथा अधिक संख्या में सांख्ययोगी बहने आकर आशीर्वाद दी थी । मंदिर के कोठारी परेशभाई पटेल तता युवक मंडल के सदस्यो ने अच्छी सेवा प्रदान किये थे । महोत्सव के मुख्य यजमान पद पर अ.नि. कांतिभाई रणछोडभाई पटेल परिवार था । पारायण के मुख्य यजमान गं.स्व. निरंजनाबेन महेन्द्रभाई भावसार, वर्त. धवलभाई, संदीपभाई आदि कई हरिभक्त इसके यजमान पद पर रह कर लाभ उठाये थे। प्रतिदिन नवीन उत्सव मनाया गया था । हरिभक्तो ने अच्छा लाभ उठाया ।(शा. स्वामी धर्मनंदनदासजी - जेतलपुरधाम)

मूली प्रदेश के सत्संग समाचार

मूली श्री स्वामिनारायण मंदिर हिंडोला दर्शन

मूलीधाम निवासी श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. १००८ आचार्य श्री

कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आज्ञा से एवम् प.पू. बडे महाराजश्री तथा परमपूज्य लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा मूली मंदिर के महंत स.गु. शा. स्वा. हरिप्रकाशदासजी गुरु स.गु. शा. स्वा. नारायणप्रसाददासजी की प्रेरणा मार्गदर्शन से श्री स्वामिनारायण मंदिर मूली में अषाढ वद-२ से श्रावण वद-२ तक श्री राधाकृष्णदेव आदि देवो के समक्ष भव्य हिंडोला दर्शन किया जायेगा। जिसमें फल, फूल, साग-सब्जी, मेवा-राखी आदि विविध प्रकार के हिंडोला बनाकर ठाकुरजी को झूलाया जायेगा। जिसका सभी को दर्शन करने के लिये संस्तुति की जाती है।(कोठारी स्वामी - मूली मंदिर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर धांगधा (सीता दरवाजा)
१५९ वाँ पाटोत्सव

मूलीधाम निवासी श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् प.पू. बडे महाराजश्री तथा परमपूज्य लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद से धांगधा श्री स्वामिनारायणमंदिर (सीता दरवाजा) का १५९ वाँ वार्षिक पाटोत्सव उल्लास पूर्वक मनाया गया था। ठाकुरजी का अभिषेक अन्नकूट आरती करके सभा में श्रीहरिकृष्णधाम से आये। स.गु. स्वा. भक्तिहरि स्वामी और धर्मजीवन स्वामी आदि संत मंडल ने कथा-वार्ता धुन गाये थे। हरिभक्त दर्शन करके धन्य हुए।(प्रति अनिल दूधरेजिया)

श्रीहरिकृष्ण धाम रणजीतगढ

मूलीधाम निवासी श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से एवम् प.पू. बडे महाराजश्री तथा परमपूज्य लालजी महाराजश्री एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से श्रीहरिकृष्णधाम रणजीतगढ में दि. ११-६-२३ दिन रविवार को सुंदर सत्संग सभा हुई। प्रत्येक माह के दूसरे रविवार को सभा की जाती है। जिस में स.गु. शा. स्वामी भक्तिहरिदासजी और संत मंडल कथा, वार्ता, कीर्तन की धुन अच्छे रुप से किये थे। आस-पास गाँव के हरिभक्त कथा वार्ता का लाभ लिये थे।(प्रति. अनिल दूधरेजिया)

विदेश के सत्संग समाचार

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का आस्ट्रेलिया के लिये धार्मिक भ्रमण

पिछली तीन साला कोरोना के बाद अपने आस्ट्रेलिया में जहाँ पर मंदिर है। और जहाँ पर नही है। वहाँ के हरिभक्त मंडल चलाते है। जहाँ पर अपने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री जा नही पाये। वहाँ के हरिभक्त आपकी प्रतिक्षा कर रहे थे। प.पू. महाराजश्री देश में कई कार्यक्रम में व्यस्त थे। फिर भी विदेश के हरिभक्तो के खुशी के लिये दि. ८-६-२०२३ से दि. १८-६-२०२३ के बीच आस्ट्रेलिया गये थे। साथ में स.गु. शा. स्वामी रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर), स.गु. कोठारी शा. स्वामी नारायणमुनिदासजी (कालुपुर), स्वामी श्रीजीस्वरुपदासजी और हजूरी पार्षद वनराज भगत सेवा में थे। दि. ८ से ९ जून २३ श्री स्वामिनारायण मंदिर पर्थ में सार्वजनिक सत्संग सभा और श्री स्वामिनारायण मंदिर सिडनी ब्लैकटाउन में गये थे। सार्वजनिक सत्संग सभा और दि. १३ से १५ जून २३ श्री स्वामिनारायण मंदिर सार्वजनिक सत्संग सभा में जाना, डरीमीट में सत्संग सभा में गये थे। बेरोनिया में सार्वजनिक सत्संग सभा में गये थे। आस्ट्रेलिया में ७ वाँ मंदिर बनने जा रहा है। कुछ दिन में कार्य प्रारम्भ होगा। इस उपलक्ष्य में सभा और शाकोत्सव किये थे। और १८ जून २३ श्री स्वामिनारायण मंदिर एडिलेड मे सार्वजनिक सभा में आये थे।

इस प्रकार आस्ट्रेलिया में निवास करने वाले अपने हजारो हरिभक्तो को दर्शन एवम् आशीर्वाद का सुख दिये। सभी लोगो से हाल-चाल पूछे थे। आप सभी आपस में प्रेम से सत्संग करे। आप सभी की श्री नरनारायणदेव सुखी करे। ऐसा आशीर्वाद देकर पुनः वापस अपने देश आ गये। (शा. नारायणमुनि स्वामी कोठारीश्री - कालुपुर मंदिर)

परमपूज्य लालजी महाराजश्री की अमेरिका धर्मयात्रा

कोरोना काल में देश और विदेश में अनेक क्रिया कलाप स्थगित हो गयी थी। सत्संग तथा भजन हरिभक्त घर पर रहकर कर रहे थे।

अब भगवान की कृपा से अच्छा समय आया है। श्री नरनारायण देव देश गद्दी के अपने भविष्य के आचार्य १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री पिछले एक वर्ष से सत्संग की प्रवृत्ति में अधिक व्यस्त रहे। अपना सबसे बड़ा महोत्सव अहमदाबाद में नरनारायणदेव का ''पर्व'' तथा ''आचार्य वंदना'' महोत्सव मूली मंदिर श्री राधाकृष्णदेव का २०० वाँ पाटोत्सव ''उत्सव'' और अभी अंत में भुज मंदिर श्री नरनारायणदेव का २०० वाँ पाटोत्सव में उपस्थित रहे। गुजरात के कई गाँवो में कथा, पारायण, पाटोत्सव, प्रतिष्ठा, आदि अवसर पर आप की उपस्थिति में मनाया गया था। प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री देश विदेश के सत्संग में प्रवृत्तिशील रहे थे।

अमेरिका में ११ जून से २२ जून तक रहे थे। उसमें न्यूयार्क पारसीप में अपना श्री स्वामिनारायण मंदिर में ठाकुरजी का पाटोत्सव उल्लास पूर्वक मनाया गया था । संतो द्वारा कथा-वार्ता की गई थी । हजारो हरिभक्त काफी समय के बाद कथा-वार्ता, धर्मकुल का दर्शन करके धन्य हुए । श्री स्वामिनारायण मंदिर राले और बायस में भी प.पू. लालजी महाराजश्री पधारे थे । और ठाकुरजी का षोडशोपचार महाभिषेक, पाटोत्सव और अन्नकूट आरती करके दोनो मंदिर में हरिभक्तो को आशीर्वाद दिये थे । हरिभक्तो से बोले अवकाश के दिन दर्शन हेतु मंदिर में अवश्य आये । अपने संत कथा-वार्ता करके हरिभक्तो को लाभ दिये थे । (शा. नारायणमुनि स्वामी कोठारीश्री - कालुपुर मंदिर)

अषाढ सुद-१५ पूर्णिमा तथा ध्वजा के यजमानश्री

ठाकुरजी का थाल, संत-पार्षद और हरिभक्तो की सभा और सत्संग सभा के यजमानश्री प.भ. कैलासबेन अंबालाल बाभईदास पुरुषोत्तम पटेल (गवाडावाले) महालक्ष्मी परिवार (शाहीबाग) - ह. डॉ. भावनाबेन हितेषभाई पटेल, किंजलबेन धवलभाई पटेल, तनिष्का, किसवी, मिसिका (वर्त - कैनेडा)

गुरुपूर्णिमा में धर्मकुल गुरुपूजन के यशस्वी यजमान

प.भ.अ.नि. हिराभाई तुलसीदास पटेल (कुंडालवाले) वर्त - प.भ. गोविंदभाई पुत्र किरणभाई वृजेशभाई (अमेरिका) अल्पेशभाई पौत्र प्रभव, नशान्त (अमरिका)

क्या हमें 'लगाव' और निरंतरता है ?

हम प्रतिदिन अनपे मन को टटोलते है क्या ? क्या हमे भगवान के प्रति लगाव है ? भगवान को साथ रखना है ? सम्पूर्ण रुप से कहे तो क्या भगवान के प्रति (अखंड वृत्ति) रखना है ? अति कठिन वात है न ?

नहीं, कठिन तो नही है ? सर्व प्रथम हम निश्चित करे कि हमे भगवान, संत संतपुरुषो के प्रति लगाव है कि नही ? महत्ता है कि नही ? एकबार निश्चित करे कि महाराज के प्रति 'लगाव' है। महाराज के सिवया एक कदम भी मेरा पूर्ण नहीं है। महाराज ही हमारे जीवन है। यदि ऐसा है तो लगाव अवश्य है।

यदि अब 'लगाव' तो उनकी आज्ञा को शिरोधार्य करना चाहिए। किसी भी आज्ञा का उल्लंधन क्यो करे ? जिसे भगवान और संत की महत्ता समझ में आ गयी है। जिसे भगवान के प्रति लगाव रहेगा। वह व्यक्ति निरंतरता अवश्य बनाये रखेगा।

यदि आज्ञा पालन का लगाव नही रहेगा। तो वह भगवान की महत्ता समझा ही नही। जिसे लगाव रहता है वह व्यक्ति आराम से आज्ञा का पालन करता है। महाराज ने हम लोगो को शिक्षापत्री, वचनामृत में जो आज्ञा किये है। वह पालन तभी कर सकते है जब महाराज के प्रति 'लगाव' रहेगा। लगाव होने पर निरंतरता बनी रहती है।

पूज्य बड़े महाराजी अप्रैल २०२३ में महाराज के पूणे जिले में एक रिसोर्ट में श्री हरिशभाई वरु पूणे के एक हरिभक्त द्वारा आयोजित सभा में रात्रि के समय 'लगाव' और 'निरंतरता' पर बात किये थे।

श्री हरिशभाई ने सात दिन महाराष्ट्र के इस प्रवास में ''दादा खाचर'' की तरह सब कुछ सर्मपण करके अर्पण क्या होता है वह दिखाये।

श्री स्वामिनारायण मासिक में लेखको से लेख लिखने के लिये सूचना

प.पू. लालजी महाराजश्री के आज्ञा से अपने श्री स्वामिनारायण मासिक में सम्प्रदाय की मर्यादा को ध्यान में रखकर लेखक-संत-हरिभक्त अच्छे लिखावट में लेख लिखकर भेज सकते है। विद्वान लेखको से विशेष लेख के लिये मेरा नम्र सूचन है।

अपने प्रत्येक मंदिर का कैलेन्डर छपवाने के विषय में सूचना

अपने शिखरबध्ध और हरि मंदिरो द्वारा नये वर्ष के पंचाग (कैलेन्डर) छापते है । लेकिन अब परम पूज्य लालजी महाराजश्री की विशेष आज्ञा है कि हर मंदिर के कैलेन्डर अपने कालुपुर अहमदाबाद मंदिर से छपवाना होगा । कैलेन्डर छपवाने वाले संत-महंत-हरिभक्त विशेष ध्यान दे

हिंडोळा उत्सव

तिथि	तारीख	वार	हिंडोळा
अषाढ वद-२	५-७	बुधवार	फूल
अषाढ वद-३/४	६-७	गुरुवार	प्लास्टीकके मोती
अषाढ वद-५	७-७	शुक्रवार	कलर सर्कल
अषाढ वद-६	८-७	शनिवार	पेच
अषाढ वद-७	९-७	रविवार	एक्रेलीक
अषाढ वद-८	१०-७	सोमवार	लखोटी
अषाढ वद-९	११-७	मंगलवार	रेशमधागा
अषाढ वद-१०	१२-७	बुधवार	चोकलेट
अषाढ वद-११ (अगीयारस)	१३-७	गुरुवार	सुखे मेवे
अषाढ वद-१२	१४-७	शुक्रवार	कौडी
अषाढ वद-१३	१५-७	शनिवार	फूल
अषाढ वद-१४	१६-७	रविवार	फल
अषाढ वद-३० (अमावस्या)	१७-७	सोमवार	जरी
अ.श्रावण सुद-१	१८-७	मंगलवार	कच्छी पेच
अ.श्रावण सुद-२	१९-७	बुधवार	सोपारी
अ.श्रावण सुद-३	२०-७	गुरुवार	काटन आर्ट
अ.श्रावण सुद-३	२१-७	शुक्रवार	चोकलेट
अ.श्रावण सुद-४	२२-७	शनिवार	शाक-सब्जी
अ.श्रावण सुद-५	२३-७	रविवार	फूल
अ.श्रावण सुद-६	२४-७	सोमवार	मुखवास
अ.श्रावण सुद-७	२५-७	मंगलवार	चोरस मोती
अ.श्रावण सुद-८	२६-७	बुधवार	कमल गट्टा
अ.श्रावण सुद-९ (श्रीहरि जयंती)	२७-७	गुरुवार	सूखे मेवे
अ.श्रावण सुद-१०	२८-७	शुक्रवार	ग्लास पाईप
अ.श्रावण सुद-११ (एकादशी)	२९-७	शनिवार	नंग
अ.श्रावण सुद-१२	३०-७	रविवार	मीनाकारी
अ.श्रावण सुद-१३/१४	३१-७	सोमवार	वाइट पल्स
अ.श्रावण सुद-१५ (पुनम)	१-८	मंगलवार	डायमंड
अ.श्रावण वद-१	२-८	बुधवार	गोल्डन पीस
अ.श्रावण वद-२	३-८	गुरुवार	बर्तन
अ.श्रावण वद-३	४-८	शुक्रवार	चलन वाले सिक्के
अ.श्रावण वद-४	५-८	शनिवार	इलायची
अ.श्रावण वद-५/६	६-८	रविवार	मयुर
अ.श्रावण वद-७	७-८	सोमवार	काच के टुकडे
अ.श्रावण वद-८	८-८	मंगलवार	चोकलेट
अ.श्रावण वद-९	९-८	बुधवार	अनाज
अ.श्रावण वद-१०	१०-८	गुरुवार	सीप
अ.श्रावण वद-११	११-८	शुक्रवार	फल
अ.श्रावण वद-११ (एकादशी)	१२-८	शनिवार	सूखे मेवे
अ.श्रावण वद-१२	१३-८	रविवार	डायमंड
अ.श्रावण वद-१३	१४-८	सोमवार	हंस
अ.श्रावण वद-१४	१५-८	मंगलवार	राष्ट्र ध्वज
अ.श्रावण वद-३० (अमास)	१६-८	बुधवार	डायमंड पेच
श्रावण सुद-१	१७-८	गुरुवार	सिल्वर पीस
श्रावण सुद-२	१८-८	शुक्रवार	चोकलेट
श्रावण सुद-३	१९-८	शनिवार	मुखवास
श्रावण सुद-४	२०-८	रविवार	चरण चिन्ह
श्रावण सुद-५	२१-८	सोमवार	फुल
श्रावण सुद-६	२२-८	मंगलवार	नंग
श्रावण सुद-७	२३-८	बुधवार	वुडन आर्ट
श्रावण सुद-८	२४-८	गुरुवार	काच के मोती
श्रावण सुद-९ (श्रीहरि जयंती)	२५-८	शुक्रवार	सूखे मेवे
श्रावण सुद-१०	२६-८	शनिवार	गोल्डन पेच
श्रावण सुद-११ (एकादशी)	२७-८	रविवार	पवित्रा
श्रावण सुद-१२	२८-८	सोमवार	चोकलेट
श्रावण सुद-१३	२९-८	मंगलवार	मीनाकारी पीस
श्रावण सुद-१४	३०-८	बुधवार	एक्रेलीक पीस
श्रावण सुद-१५/१ (पुनम)	३१-८	गुरुवार	राखी
श्रावण वद-२	१-९	शुक्रवार	जरी कसब

पवित्र अधिक मास

तिथि	तारीख	उत्सव	समय
श्रा. सुद-१ मंगल	१८-७	ग्वालबाल दर्शन	८-०५
श्रा. सुद-२ बुध	१९-७	रथयात्रा	८-०५
श्रा. सुद-३ गुरु	२०-७	श्री नरनारायणदेव का पाटोत्सव	६-३० अभिषेक ८-३० अन्नकुट
श्रा. सुद-३ शुक्र	२१-७	परशुराम जयंती	८-०५
श्रा. सुद-४ शन्हि	२२-७	गणेश पूजन	८-०५
श्रा. सुद-५ रवि	२३-७	वसंत पंचमी हवेली घनश्याम महाराज का पाटो.	८-०५
श्रा. सुद-६ सोम	२४-७	कुंजगली दर्शन	८-०५
श्रा. सुद-७ मंगल	२५-७	शाकोत्सव	८-०५
श्रा. सुद-८ बुध	२६-७	राधाष्ठमी	८-०५
श्रा. सुद-९ गुरु	२७-७	रामनवमी, श्रीहरि जयंति बालस्वरूप श्रीघनश्याम महाराज का पाटोत्सव	 ६-३० अभिषेक ८-०५ श्रृंगार
श्रा. सुद-१० शुक्र	२८-७	विज्या दशमी	८-०५ श्रृंगार
श्रा. सुद-११ शनि	२९-७	हिंडोला	८-०५
श्रा. सुद-१२ रवि	३०-७	रंगमहोलघनश्याम महाराज का पाटोत्सव वामन बारस	६-३० अभिषेक ८-०५ श्रृंगार ८-०५
श्रा. सुद-१४ सोम	३१-७	नृसिंह जयंती	८-०५
श्रा. सुद-१५ मंगल	१-८	शरदोत्सव	८-०५
श्रा. वद-१ बुध	२-८	केशर स्नान श्रृंगार आरती	६-३० ८-०५
श्रा. वद-२ गुरु	३-८	हिंडोला	८-०५
श्रा. वद-३ शुक्र	४-८	हिंडोला	८-०५
श्रा. वद-४ शनि	५-८	हिंडोला	८-०५
श्रा. वद-५ रवि	६-८	हिंडोला	८-०५
श्रा. वद-७ सोम	७-८	हिंडोला	८-०५
श्रा. वद-८ मंगल	८-८	जन्माष्टमी	८-०५
श्रा. वद-९ बुध	९-८	नंद महोत्सव	८-०५
श्रा. वद-१० गुरु	१०-८	छपैया दर्शन	८-०५
श्रा. वद-११ शुक्र	११-८	वनविचरण	८-०५
श्रा. वद-११ शनि	१२-८	हिमालय दर्शन	८-०५
श्रा. वद-१२ रवि	१३-८	समूह महापूजा मुख्य यजमान	८-०५
श्रा. वद-१३ सोम	१४-८	शिवरात्रि शिव पूजन	८-०५
श्रा. वद-१४ मंगल	१५-८	श्री हनुमानजी का पूजन	८-०५
श्रा. वद-३० बुध	१६-८	अन्नकूट गोवर्धन पूजा	७-३०

संवत २०७९-८० के वर्ष में वर्षाकाल में गाँवो (देश) कथा करने गये संतोकी सूची

देशका नाम	मंडलधारक का नाम
अहमदाबाद शहेरचोर्यासी	स.गु. शास्त्री स्वामी व्रजभूषणदासजी गुरु स.गु. महंत शास्त्री स्वामी पुरूषोत्तमप्रकाशदासजी (कालुपुर)
कणभा	स.गु. शास्त्री स्वामी घनश्यामदासजी गुरु स.गु. स्वामी केशवचरणदासजी (कालुपुर)
बालासिनोर	स.गु. शास्त्री स्वामी राजेन्द्रप्रसाददासजी गुरु स.गु. स्वामी स्वयंप्रकाशदासजी (कालुपुर)
आंतरोली	स.गु. स्वामी धर्मस्वरूपदासजी गुरु स.गु. स्वामी जानकीवल्लभदासजी (एप्रोच)
लुणावाडा	स.गु. स्वामी नारायणमुनिदासजी गुरु स.गु. स्वामी मुकुन्दजीवनदासजी
मारूसणा-कटोसणा	स.गु. स्वामी रामप्रकाशदासजी गुरु स.गु. स्वामी सत्यसंकल्पदासजी (धोऴका)
ट्रेन्ट सीतापुर	स.गु. शास्त्री स्वामी आत्मप्रकाशदासजी गुरु स.गु. स्वामी नरनारायणदासजी (जेतलपुर)
विसनगर	स.गु. शास्त्री स्वामी नारणवल्लभदासजी गुरु स.गु. स्वामी हरिसेवादासजी (वडनगर)
कपडवंज	स.गु. स्वामी घनश्यामस्वरूपदासजी गुरु स.गु. स्वामी आनंदप्रसाददासजी (कालुपुर)
विहार-गेरीता	स.गु. शास्त्री स्वामी कुंजविहारीदासजी गुरु स.गु. शास्त्री स्वामी प्रेमस्वरूपदासजी (सिध्धपुर)
वडुं-डांगरवा	स.गु. शास्त्री स्वामी यज्ञप्रकाशदासजी गुरु स.गु. स्वामी गुरुप्रसाददासजी (कलोल)
बालवा	स.गु. स्वामी देवप्रकाशदासजी गुरु स.गु.महंतशास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (उनावा)
भात-कासीन्द्रा	स.गु. स्वामी श्रीरंगदासजी गुरु स.गु. स्वामी हरिनारायणदासजी (कालुपुर)
विरमगाम	स.गु. शास्त्री स्वामी आत्मप्रकाशदासजी गुरु स.गु. स्वामी नरनारायणदासजी (जेतलपुर)
लांघणज	स.गु. स्वामी धर्मकिशोरदासजी गुरु स.गु. शास्त्री स्वामी जगतप्रकाशदासजी
मोरवासण	स.गु. स्वामी नंदकिशोरदासजी गुरु स.गु. स्वामी हरिनारायणदासजी
उंझा	स.गु. शास्त्री स्वामी भक्तिनंदनदासजी गुरु स.गु. शास्त्री स्वामी प्रेमस्वरूपदासजी (कलोल)
बनासकांठा	स.गु. शास्त्री स्वामी नारायणमुनिदासजी गुरु स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (कोटा)
पोर-वावोल	स.गु. शास्त्री स्वामी रामकृष्णदासजी (आदरज)
धमासणा	स.गु. स्वामी आनंदस्वरूपदासजी गुरु स.गु. शास्त्री स्वामी वासुदेवचरणदासजी (एप्रोच)
खाखरीया	कोठार हस्तक
प्रांतिज-मोडासा	स.गु. स्वामी प्राणजीवनदासजी गुरु स.गु. स्वामी नरनारायणदासजी (प्रांतिज)
साणंद-गोधावी	स.गु. शास्त्री स्वामी ध्यानप्रियदासजी (बोपल)
शिरोही	स.गु. शा. स्वामी गुरुप्रसाददासजी गुरु स.गु. स्वामी हरिगोविंददासजी (आबु रोड)
सादरा-वासणा	स.गु. स्वामी जयप्रकाशदासजी गुरु स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (कालुपुर)
नऴकंठा	कोठार हस्तक
कुडाऴ-राजपुर	स.गु. शास्त्री स्वामी सुव्रतस्वरूपरूपदासजी (कालुपुर)
संतरामपुर	स.गु. स्वामी नारायणमुनिदासजी गुरु स.गु. स्वामी मुकुन्दजीवनदासजी

विशेष : इस देश में कोई अन्य नाम लिखवाना हो तो मुनि स्वामी से सम्पर्क करें ।

अहमदाबाद मंदिर में श्री ठाकुरजी का थाल तथा संतवर्णी पार्षदो की रसोई देने वालो की सूची

वैशाख सुद-१ प.भ.अ.नि. गोमतीबेन गोविंदभाई पटेल (ईटादरा). **वैशाख सुद-२/३** प.भ. पटेल अमृतभाई अंबालाल (सोजा), प.भ. काछडीया वृषांक निलेशभाई (अहमदाबाद), प.भ. मोदी मंजुलोबन हिरालाल (अहमदाबाद), प.भ. पारेख रघुभाई (अहमदाबाद), प.भ. ठक्कर विपुलभाई घनश्यामभाई (भुज-कच्छ). **वैशाख सुद-३** प.भ. पटेल शिवांगी अरविंदभाई परसोतमभाई (नवागाम), प.भ.अ.नि. पटेल गोदावरीबेन कानजीभाई (अहमदाबाद), प.भ. पटेल संगीताबेन विजयभाई (रडोदरा), प.भ. मूलाणी मयंकभाई चिमनलाल (अहमदाबाद), प.भ. राठोड भार्गव विनोदकुमार (अहमदाबाद), प.भ. वोरा धरतीबेन प्रफुलकुमार (बापुनगर), प.भ.अ.नि. पटेल डाह्याभाई विठ्ठलदास (अहमदाबाद), प.भ. डॉ. राकेश मनहरलाल चोकसी (अहमदाबाद). **वैशाख सुद-४** प.भ.अ.नि. रामजी वालजी वरसाणी (मांडवी-कच्छ), प.भ. मनजी केसरा हिराणी (मांडवी-कच्छ). **वैशाख सुद-५** प.भ. दिनेश रमेश केराई (सुखपर-कच्छ), प.भ.अ.नि. मनजी परबत (कोडकी-कच्छ). **वैशाख सुद-७** प.भ. आशिष दिनेश केराई (माडंवी-कच्छ), प.भ. राजेश मनुभाई पांभर (बोपल). **वैशाख सुद-८** प.भ. ध्यानी विमल राबडीया (बलदीया-कच्छ). **वैशाख सुद-९** प.भ.अ.नि. मनहरलाल शांतिलाल चोकसी. **वैशाख सुद-१०** प.भ. प्रविण ध.प. ननिता केराई (कच्छ), प.भ. जीतुभाई दरजी (अहमदाबाद), प.भ. विशाल नरेन्द्रभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. गौरीबेन हिरालाल पटेल (अहमदाबाद), प.भ. पटेल कविश जयकुमार (अहमदाबाद), प.भ.अ.नि. दिवालीबेन वल्लभभाई नसीत (अहमदाबाद), प.भ. कांतिलाल मावजी खीमाणी (दहींसरा-कच्छ), प.भ. जयंतिभाई नटवरभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ.अ.नि. ललीताबेन चंदुभाई (अहमदाबाद), प.भ. चंद्रकांत महाशंकर भट्ट (अहमदाबाद), प.भ. संजयभाई सवजीभाई (भुज-कच्छ), प.भ. चौधरी जीवीबेन मणीलाल (समौ). **वैशाख सुद-१२** प.भ. गोपाल नारण मनजी वेकरीया (बलदीया-कच्छ), श्री नरनारायणदेव प्रसन्नार्थे (अहमदाबाद), प.भ. गोवाभाई माधाभाई चौधरी (वेडा), प.भ. कनुभाई जेरामभाई बाबरीया (अहमदाबाद), प.भ. पटेल नारणभाई बलदेवभाई (भाणपुर), प.भ. लालभाई मनजी संभाडीया (मांडवी-कच्छ), प.भ. मनजी शिवजी हिराणी (नारणपर-कच्छ), प.भ. रामजी प्रेमजी वरसाणी (सुखपर-कच्छ). **वैशाख सुद-१३** प.भ. जगदीश कल्याण हिराणी (मानकुवा-कच्छ), प.भ.अ.नि. धनुबेन शिवजी (बलदीया-कच्छ), प.भ. खीमजीभाई मेघजी गाजपरीया (बलदीया-कच्छ), प.भ.अ.नि. नगीनदास प्रेमजीभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. मनसुखभाई भगवानभाई वघासीया (वडोदरा). **वैशाख सुद-१४** प.भ.अ.नि. धनजी शिवजी (कोडकी-कच्छ), प.भ. जीवणभाई भगवानभाई कथीरीया (सुरत), प.भ. हिरजी नाराण मेपाणी (सुखपररोहा-कच्छ), प.भ. अमरबेन शिवजी भूडीया (सुखपररोहा-कच्छ). **वैशाख सुद-१५** प.भ.अ.नि. केशरबाई विश्राम वेकरीया (बलदीया-कच्छ), प.भ.अ.नि. मावजी वेलजी गोरसीया (सुखपर-कच्छ), प.भ. रमेशचंद्र भगवानदास काकडीया (वस्त्राल), प.भ. पुरीबेन शामजीभाई वरसाणी (अहमदाबाद), प.भ. मुकेशकुमार परसोतमभाई पटेल (आणंद), प.भ. पटेल प्रदिपभाई चतुरभाई (गवाडा), प.भ. पटेल अमृतभाई पुंजीराम (वेडा), प.भ. निलेशभाई लाखाणी (भुज-कच्छ), प.भ.अ.नि. प्रभाबेन रतीभाई धोलकिया (लाठी), प.भ.अ.नि. मेघजीभाई लालजीभाई पिंडोरीया (गोधरा-कच्छ).

वैशाख वद-१ प.भ. हरिकृष्ण वेकरीया (भुज-कच्छ), प.भ. पटेल जसवंतभाई फुलाभाई (मोटेरा), प.भ.अ.नि. अमरबाई करशन हालाई (दहींसरा-कच्छ). **वैशाख वद-२** प.भ. एम. एस. (वडोदरा), प.भ. पार्थ - ईशा पटेल (बामणगाम), प.भ. एक हरिभक्त (अहमदाबाद). **वैशाख वद-३** प.भ. शिवानी कांतिभाई पटेल (चांदखेडा), अ.नि. सद्. शा. स्वामी उत्तमप्रियदासजी गुरु सद्. स्वामी कृष्णकेशवदासजी (महेसाणा मंदिर), प.भ.अ.नि. बलदेवभाई नरसंगभाई चौधरी (माणेकपुर), प.भ. चौधरी नरेन्द्रभाई गांडाभाई (माणेकपुर), प.भ.अ.नि. ओधवजीभाई जादवजीभाई पटेल (मेडा). **वैशाख वद-४** प.भ.अ.नि. रतनबेन शीवजी भुवा (सुखपर-कच्छ), प.भ. नितेषभाई भगवानजीभाई मारवी (जीरागढ). **वैशाख वद-५** प.भ. रोनक भरतभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. भरतभाई पटेल (जोरणंग), प.भ. पटेल संगीताबेन विजयभाई (रडोदरा), प.भ.अ.नि. अंबालाल प्राणभाई पटेल (चांदखेडा), प.भ.अ.नि. हिरबाई खीमजी गोरसीया (मानकुवा-कच्छ). **वैशाख वद-६** प.भ. चौधरी संतोषभाई जेठाभाई (माणेकपुर), प.भ. सोलंकी ओम दिनेशभाई (अहमदाबाद). **वैशाख वद-७** प.भ. सौरभकुमार जोशी (अहमदाबाद). **वैशाख वद-८/९** प.भ. गोविंद लक्ष्मण गोरसीया (सुखपर-कच्छ), प.भ. नानजीभाई मारू (मोहन भगत गुरु स्वा. भगवानदासजी (जुनागढ), प.भ. रवि एन. पटेल (अहमदाबाद), प.भ.अ.नि. लीलाधरभाई गणेशभाई (सरवाल). **वैशाख वद-१०** प.भ. वनिशा कांति हालाई (यु.के.), प.भ. मीनाबेन प्रितेशकुमार (सांगणपुर), प.भ. हितेशभाई आर. पटेल (अहमदाबाद), प.भ. घनश्यामभाई गणेशभाई पटेल (बोपल), प.भ.अ.नि. रमणभाई मगनभाई पटेल (बायड), प.भ. हरिदर्शन लालभाई सोनी (अहमदाबाद). **वैशाख वद-१२** प.भ. रामजी नारण दबासीया (कोडकी-कच्छ), प.भ. वालजी हरजी मेपाणी (बलदीया-कच्छ), प.भ. मनजी शिवजी हिराणी (नारणपर-कच्छ), श्री रंगमहोल घनश्याम महाराज प्रसन्नार्थे (अहमदाबाद), प.भ. किशोरभाई भीखाभाई क्याडा (निकोल), प.भ. परबत रवजी हिराणी (सुखपररोहा-कच्छ), प.भ. मधुकर एस. लखणाणी (कलोल), प.भ.अ.नि. वेलजीभाई लालजीभाई हिराणी (मांडवी-कच्छ), प.भ. गोविंदभाई माधवलाल (वडु). **वैशाख वद-१३** प.भ. लाभुबेन कल्याणभाई गढीया (सुरत), प.भ. नारणभाई अमरशीभाई हडीयल (हलवद), प.भ. अरविंदभाई प्रहलादभाई पटेल (मोखासण), प.भ.अ.नि. गंगाबेन पोपटलाल (पलीयड), प.भ. पटेल तेजलबेन जनकभाई (गांधीनगर). **वैशाख वद-१४** प.भ.अ.नि. तेजबाई शिवजी हालाई (दहींसरा-कच्छ), प.भ. घनश्यामभाई नटवरभाई पटेल (कलोल), प.भ. रमेशभाई पटेल (वडुवाला-अहमदाबाद). **वैशाख वद-३०** प.भ.अ.नि. परसोतमभाई पुनाभाई कथीरीया (पीठवडी), प.भ.अ.नि. लालजीभाई नानजीभाई वरसाणी (सामत्रा-कच्छ), प.भ. पटेल अर्थव रोमितभाई (कडी).

जेठ सुद-१ प.भ. भक्ति विशाल पटेल परिवार (अहमदाबाद), प.भ. कोकीलाबेन रतीलाल पटेल (वडोदरा), प.भ. पटेल कनुभाई बाबुभाई (अहमदाबाद), प.भ.अ.नि. विदुलाबेन महेन्द्रभाई, प.भ. दिशांक निलेशभाई काछडीया (अहमदाबाद), पू. स.गु. महंत शा. स्वामी पी.पी. स्वामीना सन्मान

अहमदाबाद मंदिर में श्री ठाकुरजी का थाल तथा संतवर्णी पार्षदो की रसोई देने वालो की सूची

समारोह निमित्ते (कालुपुर मंदिर), प.भ.अ.नि. करशन शामजी तथा अ.नि. पू. श्रीरंगदासजी स्वामीनी पुण्य स्मृति अर्थे (रामपर वेकरा-कच्छ), (सांझनी रसोई) पू. महंत शा. पी.पी. स्वामीनी नियुक्त निमित्ते (ह. स.गु. शा. स्वा. रामकृष्णदासजी). **जेठ सुद-२** प.भ. योगेश रसिकलाल चौहाण (अहमदाबाद), प.भ. भक्ति विशाल पटेल सह परिवार (बामणगाम), प.भ. जयंतिभाई भीखाभाई ढोलरीया (वांसयाली), प.भ. शांतिभाई नारणभाई बूटीया (बलोल-भाल), प.भ. राकेशभाई गीरीशभाई भट्ट (बालवा). **जेठ सुद-३** प.भ. पटेल डाह्याभाई जोईतारामभाई (खेरवा), प.भ.अ.नि. करशन मावजी वरसाणी (मिरजापुर-कच्छ), प.भ. सोनी हरिन्द्र मितेषभाई धोलकिया (राजकोट). **जेठ सुद-४** प.भ.अ.नि. करशनभाई विश्राम छभाडीया (मांडवी-कच्छ), प.भ. करशन देवजी हिराणी (केरा-कच्छ), प.भ. कृणाल देवेन्द्रभाई पंड्या (अहमदाबाद), प.भ. रामजी प्रेमजी वरसाणी (सुखपर-कच्छ). **जेठ सुद-५** प.भ.अ.नि. धीरूभाई हिराभाई (आकरूंद). **जेठ सुद-६** प.भ. प्रेमबाई कानजी वेकरीया (मांडवी-कच्छ). **जेठ सुद-७** प.भ. नानजीभाई विरजीभाई पीठडीया (निकोल). **जेठ सुद-८** प.भ. रीटाबेन केतनभाई पटेल, प.भ. संदिपभाई जोशी (पोरबंदर), प.भ. भार्गवकुमार अमृतलाल (अहमदाबाद), प.भ. कांतिभाई भीखाभाई. **जेठ सुद-९** अ.नि. सद्. स्वामी घनश्यामप्रकाशदासजी (ब्रह्मचारी) (कलोल), प.भ. पटेल जतीनकुमार मनहरभाई (धनसुरा), सांख्ययोगी रामबाई लालजी हिराणी (भुज-कच्छ), प.भ. आलोक पूर्वि जान्वी दवे (अहमदाबाद). **जेठ सुद-१०** प.भ. गोपाल लालजी वेकरीया परिवार (सुखपर-कच्छ), प.भ. डॉ. गंगारामभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. रिकिन नरेशभाई ठक्कर (अहमदाबाद), प.भ. मंगुबेन कांतिलाल पटेल (गांधीनगर), प.भ.अ.नि. सचिन अशोकभाई पटेल. **जेठ सुद-११** प.भ. वालबाई नारण जेसाणी (बलदीया-कच्छ), प.भ. अमरकुमार विष्णुप्रसाद पटेल (अहमदाबाद), सांख्ययोगी भारतीबा, सांख्ययोगी मंजुबा (हवेली-अहमदाबाद). **जेठ सुद-१२** प.भ. मनजी शिवजी हिराणी (नारायणपर-कच्छ), प.भ. रमेशभाई भक्तिदास (राजपुर-कडी), प.भ. पटेल दिलीपभाई (करजीसण), परमकृपालु श्री नरनारायणदेव प्रसन्नार्थे भावसारभाई (अहमदाबाद), प.भ. चोकसी मनीषभाई जीतुभाई (अहमदाबाद), प.भ. पटेल प्रियंकाबेन नंदुभाई (साचोदर), प.भ.अ.नि. अरविंदभाई देवसीभाई राठोड (आणंद), प.भ. अंकित हर्षद ठक्कर, प.भ. रमेशभाई मोहनभाई चोटलीया (नवसारी). **जेठ सुद-१३** प.भ. किशिव हरिकृष्णभाई राखोलीया (सुरत), प.भ. पटेल दशरथभाई (डुंगरीवाला) (अहमदाबाद), हवेली महिला मंडल कालुपुर मंदिर, प.भ. दशरथभाई कानजीभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. पटेल रईबेन हिराभाई (डांगरवा), प.भ.अ.नि. हरिभाई करशनभाई रादडीया (अहमदाबाद), प.भ.अ.नि. कुवरजी मावजी पिंडोरीया (कच्छ), प.भ. भरतभाई कांतिलाल पटेल (कडी). **जेठ सुद-१४** प.भ. जयंतीभाई कालुभाई नाकराणी (सुरत). **जेठ सुद-१५** प.भ. पारूलबेन गौतमभाई पटेल (सुरज), प.भ. पटेल सोनलबेन मेहुलभाई (वालोल), प.भ. रजनीकांतभाई पी. पटेल (अहमदाबाद), प.भ. हरजी गांगजी सह परिवार (मांडवी-कच्छ), प.भ. सोनी कौशल अश्विनभाई (बोपल), प.भ. पटेल भाविक संजयभाई (उनावा), प.भ. श्रृष्टि परबत गोरसीया (बलदीया-कच्छ), प.भ. पूजा केतनभाई पटेल, प.भ. अमित विष्णुभाई पटेल (गांधीनगर).

जेठ वद-२ प.भ.अ.नि. देवसी हिरजी भुडीया (सुखपर-कच्छ), अ.नि. सद्. महंत स्वामी जगदीशप्रकाशदासजी (धोलका), प.भ. रसिकलाल फकीरचंद मोदी (विसनगर). **जेठ वद-३** प.भ. हर्ष रजनीकांत पटेल (साबरमती), प.भ. मोनाबेन महेन्द्रभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. जीयाबेन बिपीनभाई पटेल (मोयद), प.भ. हिरजी रत्ना हिराणी (गोधरा-कच्छ), प.भ. पियुष दशरथभाई पटेल (कलोल). **जेठ वद-४** श्री सहजानंद एन्जीनियर्स (बोपल), प.भ. सुरभीबेन पंकजभाई त्रिवेदी (अहमदाबाद). **जेठ वद-५** प.भ. पटेल जगदीशचंद्र रतीलाल (अहमदाबाद), प.भ.अ.नि. परसोतमभाई कानजीभाई वासाणी (रवापर-कच्छ). **जेठ वद-७** प.भ.अ.नि. कमलाबा बलदेवसिंह वाघेला (अहमदाबाद), प.भ. कांताबेन प्रहलादभाई (डांगरवा), प.भ. अर्शी जय पटेल (अहमदाबाद), प.भ. भोगीलालभाई सी. पटेल (अहमदाबाद), प.भ. जाह्नवी प्रियान्सी - हिनाली जयेशभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. श्री देवु भगत जयसियाराम - श्री किशोरभाई मोढा (राणाकंडोराणा). **जेठ वद-८** प.भ. सिवन्याबेन खूंट (अहमदाबाद), प.भ. निलेशभाई लल्लुभाई मांगुकिया (निकोल), प.भ. हिराबेन गोविंदभाई पटेल (राणीप), प.भ. कलावतीबेन विरेन्द्रभाई, प.भ. किंजलबेन जसुभाई पटेल (उनावा), प.भ. पटेल भरतभाई करशनभाई (अहमदाबाद), प.भ. भरतभाई पी. वकील (अहमदाबाद), प.भ.अ.नि. जयसुखभाई नारणभाई कथीरीया (सुरत). **जेठ वद-९** प.भ. पटेल वसंतभाई नटवरलाल (सोजा). **जेठ वद-१०** प.भ. पटेल कुसुमबेन रजनीकांत (अहमदाबाद), प.भ.अ.नि. वालबाई लालजी केराई (रामपर-वेकरा-कच्छ). **जेठ वद-११** प.भ. रत्नाकर निरंजनभाई लाखाणी (अहमदाबाद). **जेठ वद-१२** प.भ.अ.नि. विरचंदभाई भावसार (सरसपुर-अहमदाबाद), प.भ. गोविंदभाई खीमजी पिंडोरीया (नारायणपर-कच्छ), प.भ. पटेल मधुबेन सोमदास (साणंद), प.भ. पटेल सोमाभाई वाघजीभाई (धनसुरा), प.भ. सोमबाई शिवजी रूपालीया (सुखपर-कच्छ), प.भ. मनजी शिवजी हिराणी (नारायणपर-कच्छ). **जेठ वद-१३** प.भ. युवराज अर्जुनभाई सोनी (अहमदाबाद), प.भ.अ.नि. नटवरभाई गिरधरभाई गज्जर (अहमदाबाद), प.भ. मनहरभाई शीवाभाई अमीन (वसो). **जेठ वद-१४** प.भ. रिधिका वरूणकुमार पटेल (माउन्ट आबु). **जेठ वद-३०** प.भ.अ.नि. पुंजलदासनी पुण्यतिथि निमित्ते (लक्ष्मणपुरा), श्री नरनारायण ईन्फ्रास्ट्रकचर (चांदखेडा), प.भ. सुरेशकुमार मणीलाल सोनी (अहमदाबाद), प.भ. चंद्रिकाबेन जयंतीलाल पटेल (पोर), न्यु राणीप श्री स्वामिनारायण मंदिर पदयात्रा निमित्ते प.भ.अ.नि. रसिकलाल डाह्यालाल भावसार, प.भ. वालजीभाई जीवराजभाई वेकरीया (चांदखेडा)

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्रीस्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित।

कालुपुर मंदिर में केसर स्नान कराते प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री और ठाकुरजी के समक्ष आम का अन्नकूट।

कालुपुर मंदिर के सभा मंडप में पूनम की सभा में दर्शन देते प.पू. लालजी महाराजश्री।

श्री स्वामिनारायण म्यूजियम में श्री नरनारायणदेव युवक मंडल शिबिर में युवको को प्रेरणा देते प.पू. लालजी महाराजश्री।

इडर श्री नरनारायणदेव युवक मंडल की शिबिर में युवको को प्रेरित करते हुए प.पू. लालजी महाराजश्री।

न्यु राणीप मंदिर के दसवे पाटोत्सव के अवसर पर ठाकुरजी की आरती उतारते प.पू. लालजी महाराजश्री।

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 " Permitted to post at Ahd PSO on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581/2021-2023 issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2023

मेलबोर्न (आस्ट्रेलिया) मंदिर में सभा को आशीर्वाद देते प.पू. आचार्य महाराजश्री ।

एडिलेड (आस्ट्रेलिया) मंदिर के सभा में शाकोत्सव करते प.पू. आचार्य महाराजश्री ।

ग्रीफिथ (आस्ट्रेलिया) मंदिर में शाकोत्सव में शाक बनाते तथा सभी को आशीर्वाद देते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री ।

पर्थ (आस्ट्रेलिया) मंदिर में शाकोत्सव का शाक बनाते प.पू. आचार्य महाराजश्री ।

बोरोनिया मेलबोर्न (आस्ट्रेलिया) मंदिर में बाल मंडल के साथ प.पू. आचार्य महाराजश्री ।

Praful Kharsani@gmail.com